Original Research Paper | Humanities | Volume : 5 ¦ Issue : 3 ¦ Mar 2020 ¦ e-ISSN : 2456-5040

PATHYAPUSTAK GRAPHIC DESIGN EK KAHANI- DIGDARSHAN VISHLESHAN

पाठ्यपुस्तक ग्राफिक डिजाइन एक कहानी– दिग्दर्शन विश्लेषण

राजेश कुमार निमेश

सह–आचार्य, सी आई ई टी, एन सी ई आर टी, दिल्ली

ABSTRACT

यह अध्ययन उच्चतर माध्यमिक स्तर पर सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त, और निजी विद्यालयों के अध्यापकों की ललित कला की पाठ्यपुस्तक ग्राफिक डिजाइन एक कहानी– दिग्दर्शन विश्लेषण पर आधारित है। इस अध्ययन में प्रश्नावली के माध्यम से पाठ्यपुस्तक के दिग्दर्शन पर अध्यापकों की प्रतिकियाएं प्राप्त की गई, जिसके आधार पर पुस्तक के विश्लेषण में पाया गया कि पाठ्यपुस्तक सभी मानक बिदुओं जैसेः शीर्षक रेखा अन्य विषयवस्तु से भिन्न एवम् बड़ा है, गतिविधियों के निर्देश सामग्री से अलग बोल्ड या बड़े अक्षर के आकार में है, दो रेखाओं के मध्य में पर्याप्त दूरी, पाठ्यपुस्तक में लिखित सामग्री अतिव्यापी (Overlapping) होते हुए भी पठनीय है, दृश्य लिखित जानकारी को उच्चस्तर तक उर्जा के रुप में संवाहक का कार्य करता है, दृश्य छवियाँ अध्याय की कल्पना को बढ़ाती है, विषयवस्तु की प्रकृति को उभारने के लिए सापेक्ष प्रकाश और छाया का सही उपयोग, पृष्ठ का उपयोग पूर्ण रुप से किया गया है, जिससे शब्दों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सके, पुस्तक में नकारात्मक स्थान सामग्री पर उचित ध्यान केन्द्रित और अनिवार्य करता है, प्रत्येक पृष्ठ में अनुपात, विषय वाक्यों और दृश्यों को समायोजित करने का प्रयास किया गया है, विभिन्न रंगों के शीर्षकों का उपयोंग करके गतिविधियों के बीच की सीमाओं को दर्शाया गया, आवरण डिज़ाईन आकर्षक और सौन्दर्ययत्मक ढंग तरह से तैयार किया गया है, शब्द और चित्रों को विशिष्ट स्थान दिया गया ह, पाठ्यपुस्तक के पृष्ठों के रंगों की संरचना में सामन्जस्यता है, उच्च गुणवत्ता वाले मुद्रण और जिल्द के लिए उच्च स्तर के उपकरण और तकनीक का प्रयोग किया गया है, पाठ्यपुस्तक का डिज़ाइन, संयोजन और आवरण छात्रों में जिज्ञासा उत्पन्न करता है, आदि पर आंशिक रुप से अनिश्चित और असहमत है, अर्थात पाठ्यपुस्तक शतप्रतिशत अध्यापकों की अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतरती।

मुख्यशब्दः दिग्दर्शन विश्लेषण, लिखित सामग्री अतिव्यापी, आवरण डिजाईन, डिजिटल प्रिंटिंग सिस्टम, ग्राफिक डिजाइन, विजुअलाइजेशन

परिचयः

पाठ्यपुस्तकें शिक्षण और अधिगम में अहम भूमिका निभाती है। यह शिक्षकों और शिक्षार्थियों दोनों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में एक विशिष्ट महत्व देती है। पाठ्यपुस्तकें मार्गदर्शन और अभिविन्यास की एक रूपरेखा निर्धारित करती हैं। हालांकि, कई लाभों के अलावा एक एकल पाठ्यपुस्तक अक्सर शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा नहीं करती है, इसलिए सामान्यत यह संभावना बनी रहती है कि पाठ्यपुस्तक में समयानुसार सुधार एवम् आकलन होता रहना चाहिए, ताकि प्रमाणिकता के आधार पर पाठ्यपुस्तक शिक्षक और शिक्षार्थियों में रोमांचकता लाने के लिए छवियाँ, पुस्तकों की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती हैं। विजुअलाइजेशन का उद्देश्य को संशोधित करने का एक दृश्य माध्यम प्रदान करना है। यह ध्यान रखना अति आवश्यक है कि प्रत्योक्षकरण प्रभावी तभी होगा जब यह पाठकों के ज्ञान के स्तर पर व्यवहार में अपनाई जाए और इसके प्रभाव को ऑकने के लिए समय–समय पर पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन या उसका रेखांकन प्रस्तुतिकरण दोनों पहलुओं के आधार पर किया जाना चाहिए। इस अध्ययन में राष्ट्रीय शैक्षिक प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित कक्षा ग्यारहवीं की पाठ्यपुस्तक ग्राफिक डिजाइन एक कहानी– दिग्दर्शन विश्लेषण जो कि ललितकला पर आधारित है, मूल्यांकन के लिए चुनी गई यह पुस्तक तीन इकाईयों में विभाजित की गई है जिसमें पहली इकाई ग्राफ़िक डिज़ाइन के मूल, दूसरी इकाई में ग्राफ़िक डिज़ाइन और समाज तथा तीसरी इकाई ग्राफिकीय संरचना की तकनीकें, को अध्ययन मूल्यांकन में विभिन्न महत्वपूर्ण बिन्दुओं को कथन के रुप में उपयोग किया गया है। फलस्वरुप कला शिक्षण सामग्री के सौंदर्यात्मक और वैयक्तिक चेतना के साथ–साथ पाठ्यपठन में सहायक सिद्व होगी।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध के अंर्तगत उच्चतर माध्यमिक स्तर पर ललित कला शिक्षण में एनसीईआरटी/सीबीएसई/निजी प्रकाशकों द्वारा उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर ललित कला के लिए प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों से संबंधित अध्ययन।

अध्ययन की सीमा

यह शोध शीर्षक ''उच्चत्तर माध्यमिक स्तर पर ललित कला शिक्षण में पाठ्यपुस्तक ग्राफिक डिजाइन एक कहानी –दिग्दर्शन विश्लेषण पर आधारित है। इस अध्ययन में केवल राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली क्षेत्र में स्थित सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त, निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों को ही सम्मिलित किया गया है।

शोध कार्य प्रणाली

प्रस्तुत अध्ययन कक्षा–11 की पाठ्यपुस्तक ग्राफिक डिजाइन एक कहानी पर आधारित है। इस अध्ययन हेतु दिग्दर्शन विश्लेषण मापनी के लिए यादृच्छिकी न्यादर्शन तकनीक का उपयोग करते हुए (03) सरकारी विद्यालयों, (03) सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों, और (03) निजी विद्यालयों के अध्यापकों को पाठ्यपुस्तक विश्लेषण मापनी वितरित की गई। प्रत्येक प्रत्यर्थी को (01) पाठ्यपुस्तक विषयवस्तु विश्लेषण मापनी वितरित की गई। जिसमें सभी 09 अध्यापकों से पूर्ण 9 मापनियाँ प्राप्त

Copyright© 2019, IEASRJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

हुई, जो कि वितरित मापनियों का सत् प्रतिशत रहा।

अध्ययन के अंर्तगत क्षेत्र

कथनः 1 सजावटी अक्षरों का उपयोग पुस्तक को आकर्षक और विशिष्ट बनाने के लिए किया गया है।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 2(22.22%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 5(55.56%) सहमत, 2(22.22%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः सजावटी अक्षरों का उपयोग पुस्तक को आकर्षक और विशिष्ट बनाने के लिए किया गया है के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों को सहमत पाया। सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों को अनिश्चित पाया, और निजी विद्यालयों के अध्यापकों ने अनिश्चित पाया।

कथनः 2 उपयोग किए गए अक्षर पठनीय है जैसे टाईम और क्रुतिदेव।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 6(66.67%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः उपयोग किए गए अक्षर पठनीय है जैसे टाईम और क्रुतिदेव के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों कों दृढ़तापूर्वक सहमत पाया सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों को सहमत पाया।

कथनः 3 शीर्षक रेखा अन्य विषयवस्तु से भिन्न एवम् बड़ा है।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 2(22.22%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 7(77.78%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः शीर्षक रेखा अन्य विषयवस्तु से भिन्न एवम् बड़ा है अनुसार शीर्षक रेखा अन्य विषयवस्तु से भिन्न एवम् बड़ा है के प्रति सरकारी और निजी विद्यालयों के अध्यापकों को सहमत पाया। सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों ने दृढ़तापूर्वक सहमत पाया।

कथनः 4 गतिविधियों के निर्देश सामग्री से अलग बोल्ड या बड़े अक्षर के आकार में दर्शाए गए हैं।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44-45%) सहमत, 2(22.22%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः गतिविधियों के निर्देश सामग्री से अलग बोल्ड या बड़े अक्षर के आकार में दर्शाए गए हैं, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों ने उत्तर के विकल्प के रुप में दृढ़तापूर्वक सहमत को चुना। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों ने उत्तर के विकल्प के रुप में सहमत को चुना।

कथनः 5 दो रेखाओं के मध्य में पर्याप्त दूरी रखी गयी है।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 5(55.56%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.44%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः दो रेखाओं के मध्य में पर्याप्त दूरी रखी गयी है, के प्रति सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों ने दृढ़तापूर्वक सहमत पाया। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों नें सहमत पाया।

कथनः 6 पाठ्यपुस्तक के आकार के अनुसार विषयवस्तु की रेखा की लंबाई उचित है।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 2(22.22%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 7(77.78%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ्यपुस्तक के आकार के अनुसार विषयवस्तु की रेखा की लंबाई उचित है, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों ने दृढ़तापूर्वक सहमत पाया। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों ने सहमत पाया।

कथनः 7 पाठ और पृष्ठभूमि के रंगो में उचित चमक है, और आसानी से पठनीय है।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 6(66-66%) सहमत, 1(11.11%) अनिश्चित, 2(22.22%) असहमत तथा दृढ़तापूर्वक सहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ और पृष्ठभूमि के रंगो में उचित चमक है, और आसानी से पठनीय है, के प्रति सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों ने सहमत पाया। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों ने असहमत पाया।

कथनः 8 पाठ्यपुस्तक में लिखित सामग्री अतिव्यापी (आवरलेपिंग) होते हुए भी पठनीय है।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 2(22.22%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.45%) सहमत, 3(33.33%) असहमत तथा अनिश्चित और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ्यपुस्तक में लिखित सामग्री अतिव्यापी (आवरलेपिंग) होते हुए भी पठनीय है, के प्रति सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों ने सहमत पाया। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों ने असहमत पाया।

कथनः 9 रेखाचित्रों से अधिक अन्य छायाचित्रों को प्राथमिकता दी गई।

कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के कथन संख्या 9 के योग को देखा जाए तो अध्यापकों के मत 6(66.67%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 3(33-33%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः रेखाचित्रों से अधिक अन्य छायाचित्रों को प्राथमिकता दी गई, के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत पाया गया।

कथनः 10 दृश्य सही आकार में दिए गए है, जो पाठ्को में आकर्षण और रुचि उत्पन्न करने में सहायक है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों देखा जाए तो 6(66.67%) सहमत, 3(33.33%) असहमत तथा दृढ़तापूर्वक सहमत, अनिश्चित और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः दृश्य सही आकार में दिए गए है, जो पाठ्को में आकर्षण और रुचि उत्पन्न करने में सहायक है, के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर सहमत पाया गया।वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर असहमत पाया गया।

कथनः 11 दृश्य लिखित जानकारी को उच्चस्तर तक उर्जा के रुप में संवाहक का कार्य करते हैं।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 4(44.44%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.44%) सहमत, 1(11.11%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः दृश्य लिखित जानकारी को उच्चस्तर तक उर्जा के रुप में संवाहक का कार्य करते हैं, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत पाया गया। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर सहमत पाया गया

कथनः 12 दृश्य छवियाँ अध्याय की कल्पना को बढ़ाती है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 4(44.45%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 3(33.33%) सहमत, 2(22.22%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः दृश्य छवियाँ अध्याय की कल्पना को बढ़ाती है, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत पाया गया। सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर असहमत पाया गया। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों को सहमत पाया गया।

कथनः 12 दृश्य छवियाँ अध्याय की कल्पना को बढ़ाती है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 3(33.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 6(66.67%) सहमत, तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः विषयवस्तु की प्रकृति को उभारने के लिए सापेक्ष प्रकाश और छाया का सही उपयोग किया गया है, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत पाए गए। सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर सहमत पाया गया।

कथनः 14 पृष्ठ का उपयोग पूर्ण रुप से किया गया है। जिससे शब्दों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सके।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 4(44.45%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 3(33.33%) सहमत, 2(22.22%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पृष्ठ का उपयोग पूर्ण रुप से किया गया है। जिससे शब्दों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सके, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत पाया गया। सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर सहमत पाया गया।

कथनः 15 पुस्तक में नकारात्मक स्थान (स्पेस) सामग्री पर उचित ध्यान केन्द्रित और अनिवार्य करता है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 1(11.11%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 7(77.78%) सहमत, 1(11.11%) अनिश्चित तथा असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पुस्तक में नकारात्मक स्थान (स्पेस) सामग्री पर उचित ध्यान केन्द्रित और अनिवार्य करता है, के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर सहमत पाया गया।

कथनः 16 प्रत्येक पृष्ठ में अनुपात, विषय वाक्यों और दृश्यों को समायोजित करने का प्रयास किया गया है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 1(11.11%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 7(77.78%) सहमत, 1(11.11%) असहमत तथा अनिश्चित और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः प्रत्येक पृष्ठ में अनुपात, विषय वाक्यों और दृश्यों को समायोजित करने का प्रयास किया गया है, के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर सहमत पाया गया।

कथनः 17 विभिन्न रंगों के शीर्षकों का उपयोंग करके गतिविधियों के बीच की सीमाओं को दर्शाया गया।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 5(55.56%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 4(44.44%) सहमत तथा अनिश्चित, असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः विभिन्न रंगों के शीर्षकों का उपयोंग करके गतिविधियों के बीच की सीमाओं को दर्शाया गया, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर सहमत पाया गया। सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर दृढ़तापूर्वक सहमत पाया गया।

कथनः 18 अध्याय की इकाईयों को अलग करके और स्पष्ट करने के लिए विशेष प्रयास किए गए है जैसे पृष्ठ का मार्जिन, रंग, बड़े टाईप फॉन्ट इत्यादि।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 2(22.22%) सहमत तथा 6(66.67%) अनिश्चित, 1(11.11%) असहमत तथा दृढ़तापूर्वक सहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः अध्याय की इकाईयों को अलग करके और स्पष्ट करने के लिए विशेष प्रयास किए गए है जैसे पृष्ठ का मार्जिन, रंग, बड़े टाईप फॉन्ट इत्यादि, केप्रति सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर अनिश्चित पाया गया। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर सहमत पाया गया।

कथनः 19 आवरण डिजाईन आकर्षक और सौन्दर्ययत्मक ढंग तरह से तैयार किया गया है। शब्द और चित्रों को विशिष्ट स्थान दिया गया है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 5(55.56%) सहमत, 4(44.44%) असहमत तथा, दृढ़तापूर्वक सहमत, अनिश्चित और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः आवरण डिजाईन आकर्षक और सौन्दर्ययत्मक ढंग से तैयार किया गया है। शब्द और चित्रों को विशिष्ट स्थान दिया गया है, के प्रति सरकारी और निजी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर सहमत पाया गया। वहीं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों को असहमत पाया गया।

कथनः 20 पाठ्यपुस्तक के पृष्ठों के रंगों की संरचना में सामन्जस्यता है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 6(66.67%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 3(33.33%) असहमत तथा दृढ़तापूर्वक सहमत, अनिश्चित और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ्यपुस्तक के पृष्ठों के रंगों की संरचना में सामन्जस्यता है, के प्रति सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर सहमत पाया गया। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर अनिश्चित पाया गया।

कथनः 21 आवरण आवरण विशेषरुप से शीर्षक, और प्रकाशन से संबंधित जानकारी देने में सक्षम हैं।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 7(77.78%) सहमत, 1(11.11%) अनिश्चित और 1(11.11%) असहमत तथा दृढ़तापूर्वक सहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः आवरण विशेषरुप से शीर्षक, लेखक और प्रकाशन से संबंधित जानकारी देने में सक्षम हैं, के प्रति सरकारी सरकारी सहायता प्राप्त, और निजी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर सहमत पाया गया।

कथनः 22 पाठ्यपुस्तक आकार और वजन में उचित है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 8(88.89%) सहमत, और 1(11.11%) असहमत तथा दृढ़तापूर्वक सहमत, अनिश्चित और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ्यपुस्तक आकार और वजन में उचित है, के प्रति सरकारी सरकारी सहायता प्राप्त, और निजी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर सहमत पाया गया।

कथनः 23 पाठ्यपुस्तक कागज और आकार की गुणवत्ता के कारण अधिक समय तक संरक्षित और सुरक्षित रखा जा सकता है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 6(66.67%) सहमत, और 3(33.33%) असहमत तथा दृढ़तापूर्वक सहमत, अनिश्चित और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ्यपुस्तक कागज और आकार की गुणवत्ता के कारण अधिक समय तक संरक्षित और सुरक्षित रखा जा सकता है, के प्रति सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर सहमत पाया गया। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर असहमत पाया गया।

कथनः 24 गुणवत्ता वाले मुद्रण और जिल्द के लिए उच्च स्तर के उपकरण और तकनीक का प्रयोग किया गया है जैसे डिजिटल प्रिंटिंग सिस्टम, गुणवत्ता वाली स्याही का प्रयोग आदि।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 5(55.56%) सहमत, और 4(44.44%) असहमत तथा दृढ़तापूर्वक सहमत, अनिश्चित और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः उच्च गुणवत्ता वाले मुद्रण और जिल्द के लिए उच्च स्तर के उपकरण और तकनीक का प्रयोग किया गया है जैसे डिजिटल प्रिंटिंग सिस्टम, गुणवत्ता वाली स्याही का प्रयोग आदि, के प्रति सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर सहमत पाया गया। वहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर असहमत पाया गया।

कथनः 25 पाठ्यपुस्तक का डिज़ाइन, संयोजन और आवरण छात्रों में जिज्ञासा उत्पन्न करता है।
कथन के प्रति सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों को देखा जाए तो 2(22.22%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 2(66.67%) सहमत, 1(22.22%) अनिश्चित, 4(22.22%) असहमत तथा सहमत, और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निष्कर्षः पाठ्यपुस्तक का डिज़ाइन, संयोजन और आवरण छात्रों में जिज्ञासा उत्पन्न करता है, के प्रति सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों का उत्तर असहमत पाया गया। सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अधिकतर अध्यापकों का उत्तर सहमत पाया गया। वहीं निजी विद्यालयों के अधिकतर अध्यापकों का उत्तर अनिश्चित और असहमत पाया गया। यदि अलग– अलग विद्यालयों का परिणाम देखें तो पाएँगे कि सरकारी विद्यालयः तालिका में दिए गए सभी 25 कथनो के समक्ष सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों के योग को देखा जाए तो 32(42.67%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 34(45.33%) सहमत 3(4.00%) अनिश्चित, 6(8.00%) असहमत तथा दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयः
तालिका में दिए गए सभी 25 कथनो के समक्ष सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के अध्यापकों के मतों में से 15(20.00%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 48(64.00%) सहमत, 7(9.33%) अनिश्चित, 5(6.67%) असहमत तथा दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

निजी विद्यालयः
तालिका में दिए गए सभी 25 कथनो के समक्ष निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मतों में से 7(9.33%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 41(54.67%) सहमत, 11(14.67%) अनिश्चित, 16(21.33%) असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए।

अगर हम उपरोक्त तीनों सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों का सम्मिलित परिणाम देखें तो सभी 25 कथनो के समक्ष

Volume : 5 ¦ Issue : 3 ¦ Mar 2020 ¦ e-ISSN : 2456-5040

सभी सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और निजी विद्यालयों के अध्यापकों के मत 54(40.75%) दृढ़तापूर्वक सहमत, 123(38.51%) सहमत, 21(18.14%) अनिश्चित, 7(2.60%) असहमत और दृढ़तापूर्वक असहमत के प्रति शून्य पाए गए। अर्थात लगभग 79% अध्यापक दृढ़तापूर्वक सहमत, और सहमत, दूसरी तरफ कुल 21% अध्यापक अनिश्चित, और असहमत पाए गए।

निष्कर्ष:

वर्तमान समय सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग शिक्षण–अधिगम में कई स्तर पर किया जा रहा है। लेकिन सदा से शिक्षा जगत में पाठ्यपवुस्तकों का अपना ही महत्व रहा है इसलिए वर्तमान में अतुल्य ज्ञान के माध्यम की रुचि और विशेषता निरंतर बनाए रखने के लिए इनका मूल्यांकन अति आवश्यक है जिसके लिए राष्ट्रीय शैक्षिक प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तक ग्राफिक डिजाइन एक कहानी– दिग्दर्शन के विश्लेषण में पाया गया कि पाठ्यपुस्तक सामग्री शत–प्रतिशत अध्यापकों की अपेक्षा के अनुरुप नहीं है। पुस्तक में आंशिक रुप से सुधार की आवश्यकता है। भविष्य में पाठ्यपुस्तक लिखते समय महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देते हुए समाहित किया जाना चाहिए, ताकि पाठ्यपुस्तकें अध्यापक और विद्यार्थियों के पास पहुंचे तो शतप्रतिशत गुणवत्तापूर्ण एवम् उत्तम विजुअलाइजेशन के साथ ही पहुंचें, जिससे पाठ्यपठन में रोचकता आए।

संदर्भ:

1. पृ0 सं0 गपराष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005,राश्ट्रीय भौक्षिक प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान द्वारा प्रकाशित।
2. सारा कॉस्मैनेजहेदफार्ड , मसोमेह पौरराजब , मोहतरम रब्बानी (2015). इफेक्टिव ऑफ पिक्चरस इन टेक्सटबुक्स ऑन स्टूडेंट्स क्रिएटिविटी, मल्टी–डिसप्लीनरी एड्यु ग्लोबल क्वेस्ट (क्वार्टरली). वॉल .4(14)
3. ब्लैकी , फिओन (1991). फिलोसोफिकल बेसेस फॉर कन्सेप्शन्स ऑफ सीनियर सेकेंडरी लेवल स्टूडेंट इवैल्यूएशन इन आर्ट एजुकेशन इन ब्रिटैन एंड नार्थ अमेरिका . मैरीलीन जुरमुहलिन वर्किंग पेपर्स इन आर्ट एजुकेशनवॉल .10,पृ0 सं0 96–102
4. खालिद महमूद (2009), इंडीकेटर्स फॉर ए क्वालिटी टेक्स्टबुक इवैल्यूएशन प्रोसेस इन पाकिस्तान , जर्नल ऑफ रिसर्च एंड रेफ्लेक्शंस इन एजुकेशन.वॉल .3(2), पृ0 सं0 158–176
5. https://www.scribd.com/document/326132671/The-Need-of-Textbook-Evaluation
6. अमेरियन, एम, और खैवार, ए (2014), इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लैंग्वेज लर्निंग एंड एप्लाइड लिंग्विस्टिक्स वर्ल्ड, (प्श्रस्स-।स्), वॉल्यूम 6 (1), पृ0 सं0 523–533, मैेेछ. 2289–2737और ैेछ. 2289–3245ृ.परससंसू.वतहए
7. https://www.researchgate.net/publication/320172366_Textbook_Selection_Evaluation_and_Adaptation_Procedures
8. https://web.cs.wpi.edu/~matt/courses/cs563/talks/education/IEindex.html
9. https://en.wikipedia.org/wiki/Visualization_(graphics)